शोध पत्र- हिन्दी

Dec.-09—Jan.-2010

गत दशक के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श

[मैत्रेयी पुष्पा के ''चाक'' उपन्यास के सन्दर्भ में]

* शशि प्रभा शर्मा

*व्याख्याता, हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय कोटा (राज.)

तारे आकाश की कविता है, तो धरती का संगीत माधुर्य है स्त्री। इस ईश्वर रचित सृष्टि में स्त्री की छवि आदिकाल से आधुनिक काल में विभिन्न रूपों में दृष्टिगत होती है! स्त्री विहीन समाज की कल्पना अकल्पनीय है! सृष्टि का इतना महत्वपूर्ण प्राणी होने के कारण स्त्री जिज्ञासा का कारण बनी। अगर हम राष्ट्रीय स्तर पर नारी की समस्याओं पर सोचे तो देखेगें कि लगभग वही समस्याएँ वैश्विक धरातल पर भी है सिर्फ अन्तर भोगौलिकता व सांस्कृतिक परिवेश का ही है। जब हम जीवन एवं साहित्यिक सन्दर्भो में स्त्री विमर्श पर विचार करते है तो मूल रूप से यह पाते है कि विश्व स्तर पर घटने वाली घटनाओं ने नारी जीवन को बेहद प्रभावित किया है वर्तमान में बनती नारी की छवि उन्हीं अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं की प्रतिक्रिया का ही परिणाम है।

इन अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के विवेचन में प्रमुख बात जो उभर कर आई वह यह स्त्रियों की स्वतंत्रता, समानता आदि अधिकारों की लड़ाई! यह लड़ाई पुरूषों द्वारा प्रारम्भ की गई जिनमें प्रमुख आन्दोलन है 1789 की फ्रांसीसी क्रान्ति, इस कड़ी में दूसरा प्रमुख प्रयास राजा राम मोहन राय का रहा परिणामस्वरूप 1829 में सती प्रथा का कानूनी विरोध हुआ और स्त्री के अस्तित्व को मनुष्य के रूप में स्वीकारा गया। इसी श्रृंखला में 1848 में न्यूयार्क में स्त्री मुक्ति आन्दोलन एक महत्वपूर्ण कदम था। 1862 में जॉन स्टुअर्ट मिल द्वारा ब्रिटिश पार्लियामेन्ट में स्त्री वयस्क मताधिकार प्रस्ताव रखा जाना स्त्री व पुरूष के बीच कानूनी व संवैधानिक अवधारणा को जन्म देता है और इन्हीं विश्व धरातल में घटित होने वाली घटनाओं ने स्त्री विमर्श को जन्म दिया। समाज सुधार की बौद्धिक प्रक्रिया ने जागरूकता लाने का प्रयास किया किन्तु संस्कारों की जड़ता ने उसे स्वीकार नहीं किया किन्तु जो बौद्धिक तर्क है उसे साहित्य ने संवेदना बनाने का कार्य किया। समाज सुधार की प्रक्रिया में 'विधवा विवाह' की वकालात की गई किन्तु सुधारक मात्र उपदेशक बन कर रह गए। लेकिन यह कार्य साहित्य ने किया। जब कोई विषय संवेदना का विषय बन जाता है तो जड़ता की चट्ानें टूटती है और नवीन मार्ग प्रशस्त होता है। नारी स्वातंत्र्य में अर्थ की प्रमुखता रही है। अर्थ ने स्त्री को मान व प्रतिष्ठा दी एवं अधिकार दिए। किन्तु अगर फिर भी हम आंकड़ों के आधार पर अध्ययन करें तो पाएंगे कि स्थिति कोई ज्यादा अच्छी नहीं ताजा सर्वेक्षण बताते है कि स्त्री स्वयं द्वारा अर्जित आय का कुल 2 प्रतिशत भाग ही उपभोग करती है।

वर्तमान साहित्य स्त्री की चिरपोषित अबला छवि को तोड़कर उसे संघर्षशील एवं क्रान्तिकारी स्वरूप में प्रस्तुत करता है। गत दशक के कथा साहित्य ने स्त्री की समस्याओं को उठाया है इसमें स्त्री लेखिकाएँ प्रमुख रूप से है। स्त्री विमर्श के प्रारम्भिक दौर में स्त्री लेखिकाओं ने सर्वप्रथम घरेलू जीवन को कथा का विषय बनाया क्योंकि यह सभी लेखिकाएँ एक घरेलू महिलाएँ थी इस कारण इनकी पहली समस्या थी घरेलू स्त्री की अस्मिता को स्थापित करना व रूपायित करना इसमें लेखिकाएँ सफल भी रही है। इन सफल नामों में प्रमुख नाम उभर कर आता है मैत्रेयी पुष्पा। मैत्रेयी पुष्पा का चर्चित उपन्यास 'चाक' स्त्री समस्याओं पर आधारित है इसमें ब्रज प्रदेश के पिछड़े इलाके के 'अतरपुर' जैसे गाँव की कहानी है जहाँ जाट निवास करते है गाँव हर बदलाव का विरोधी है धीरे–धीरे गाँव का स्वरूप बदलता है। परिवर्तन की लहर दिखाई देती है। यह उपन्यास पुरुष समाज में स्त्री की अपनी पहचान का संकल्प पत्र है। 'चाक' में लेखिका ने नारी के स्वरूप को विविध स्तरों पर चित्रित किया है। नारी, नारी के प्रति क्या सोचती है ? समाज का नारी के प्रति क्या दृष्टिकोण है।

उपन्यास का प्रथम पृष्ठ ही नारी जीवन की करूण कथा को व्यक्त करता है। प्रथम पंक्ति पाठक को झकझोरने वाली है। ''काश यह मौत होती'' मगर यह हत्या! पतित स्त्री, गर्भिणी औरत की हत्या! सारंग की बहन रेशम मौत के घाट उतार दी गई....(1) लेखिका इस व्यथा को व्यक्त करते हुए कहती है कि इस गाँव में किस प्रकार स्त्रियों को अपने शील व सतीत्व की रक्षा हेतु फंदे पर झूलकर, कुए में कूदकर प्राणों की आहुती देनी पड़ी। यह पंक्तियां समाज के पाशविक स्वरूप की ओर ध्यान आकृष्ट करती है। ''स्त्री कथाकारों की स्त्रियाँ में लेखिका अनामिका ने इस तरफ ध्यान आकृष्ट किया कि ''औरतो की देह से जुड़े सत्यों का आंकलन फ्रेंच फेमिनिस्टो के यहाँ तो मिल जाता है पर अपने यहाँ दैहिक संवेदनाओं को अन्तर्जगत में मर्मोद्घाटन से एकाकार करके देखने की परम्परा नहीं के बराबर रही है।...(2)

मैत्रेयी पुष्पा की कथा सृष्टि की स्त्रियां दैहिक संवेदनाओं को अन्तर्जगत के मर्मोद्धाटन के साथ व्यक्त करती दिखाई देती है। रेशम, चंदन, गुलकंदी आदि नारी पात्र इसका प्रमाण है। बूढ़ी दादी खेरापतिन कहती है – ''बेटी की मइया सुख की नींद सोई है कभी?''(3) ''पोहे–पशु और तिरिया को बस में रखने के लिए हर समय नाका रखना पड़ता है उसकी भूल मालिक की इज्जत पर भारी पड़ती है।'' यह पंक्तियाँ उस पुरूष समाज में स्त्री के दासत्व स्वरूप को उजागर करते है। इस पुरूष समाज में नायिका सारंग उन सामाजिक समस्याओं के प्रति सजग है उसका रोम रोम उन रूढ़ियों के प्रति विद्रोह व्यक्त करता है। वह कह उठती है अत्याचार तो पशु भी सहन नहीं करता सींग हिलाकर विरोध दर्ज करता है। इन नरपुंगवों को किस योनि में शामिल किया जाए। सारंग व रेशम दोनो ही क्रान्तिकारी परिवर्तन से परम्परागत सामाजिक ढाँचों को बदलना चाहती है किन्तु इस परिवर्तन की प्रक्रिया में रेशम को सामाजिक व्यवस्थाओं का शिकार बनना पड़ता है विधवा रेशम उन सामाजिक बंधनों को नहीं मानती और गर्भधारण कर लेती है और यहीं से उसके जीवन के अन्त की कहानी लिख दी जाती है किन्तु इस संघर्ष को जारी रखने का बीड़ा सारंग उठाती है इस संघर्ष में उसका पति रंजीत उसका साथ देता है यह कार्य समाज में धीरे–धीरे बदलती पुरूष मानसिकता का परिचय देता है। किन्तु दूसरी पुरूष मानसिकता भी समाज में व्याप्त है जो हमारे सामाजिक ढांचों को व्यक्त करती है''. .....अजी ज्यादातर केस तो आत्महत्या के ही होते है। पैसा ऐंठने के लिए उसे लड़की वाले दहेज का बनाते है तो कभी बलात्कार का।''.....(4) मैत्रेयी पुष्पा नारी चरित्र का सूक्ष्म विवेचन भी 'चाक' में करती है स्त्री का अस्तित्व पुरूष से ही है इस सत्य को लेखिका ने रंजीत के माध्यम से उजागर किया है। गाँव की निगाह में तुम रंजीतसिंह जाट की बहु हो, यही तुम्हारी पहचान है और हम जिस कौम, जिस समाज से जुड़े है उससे अलग वजूद नहीं रखते। विरादरी से बाहर रहकर हमारी क्या औकात ?.....(5) लेखिका ने समाज में व्याप्त सूक्तियों के माध्यम से स्त्री की दशा की ओर इशारा किया है ''बेटी जन्मी है तो इसे खबरदार भी करती रहना इसकी जननी! कि इसको कितने और कहां तक पांव बढ़ाने है। छोटी कौम से लेकर बड़ी जाति तक की औरतों की एक सी दशा है।''....(6) ''आखिरी दशक के हिन्दी कथा साहित्य की स्त्री तमाम कोशिशों के बाद सहचर पुरूष को उतना मानवीय नहीं बना सकी लेकिन अपने लिए आत्मसम्मान पूर्वक जीने का रास्ता अवश्य तलाश सकी'' ।.....(7)

मैत्रेयी पुष्पा के चाक उपन्यास की नायिका सारंग इस कसौटी पर खरी उतरती है वह उस पिछड़े समाज में रहते हुए निरन्तर संघर्ष तो करती है और प्रधान पद पर उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ने का फैसला करती है। किन्तु इस प्रधान पद की दावेदारी के संघर्ष में उसके मन में उथल पुथल चलती रहती है वह पुरूष प्रधान समाज के दबाव को व्यक्त करती है ''पुरूषों की बराबरी में जगह पाना............असंभव! 'बराबरी' शब्द खतरों की ईटों से बना है, इसे हासिल करना. ....मेरे ख्याल से यह साहस दुनिया की अमूल्य चीज है।''.(8) मैत्रेयी पुष्पा की दृष्टि स्त्री को देह से अलग कर के देखने की रही है उसमें पुरूष से अधिक गुण है। स्त्री का दैहिक सौन्दर्य ही महत्वपूर्ण नहीं वरन् उसका सृजन गुण अधिक महत्वपूर्ण है इन भावनाओं को लेखिका ने 'चाक' में व्यक्त किया है–''माँ बच्चे को जन्म देती है वह पिता से कई गुना साहसी होती है''...........(9) चाक स्त्रियों पर होने वाले अन्याय व अत्याचार का ऐसा दस्तावेज है जो समाज की सत्यता को उजागर करता है। लेकिन इन सभी समस्याओं के बीच लेखिका का आशावादी दृष्टिकोण समाज के परिवर्तन की दिशा को तय करता है और उपन्यास की यह पंक्तियाँ इस सत्य को उजागर करती है ''जब तक स्त्री का अपमान होता रहेगा, ऊसर भूमि ऐसे ही जलती रहेगी। फसल को वीरानें में बदल देगी।....(10) 'चाक' सृजन का प्रतीक है चाक से बर्तन तैयार किए जाते है लेखिका उसी 'चाक' के माध्यम से नवीन समाज की संरचना का स्वप्न देखती है और उस प्रयास में सफल भी होती है। चाक निरन्तर घूमता है मिट्टी को बिगाड़कर नया आकार, नया स्वरूप प्रदान करता है और इस प्रक्रिया में सारंग एक नया स्वरूप ग्रहण कर लेती है यह नारी की विकास यात्रा भी है। इसी तथ्य को लेखिका ने भूमिका में

व्यक्त किया है— ''इतिहास कागज के पन्नों पर उतरने से पहले मानव शरीरों पर लिखा जाता है।'' भारतीय नारी का दर्द 'चाक' में दिखाई दिया है। रंजीत सारंग से कहता है कि ''औरतों के अच्छे होने की निशानी ही केवल उसका पवित्र चाल—चलन है।'' गंदी नजर वाली औरत को लोग रंडी—वेश्या ही कह कर पुकारते है।'' महादेवी वर्मा का मत है कि ''समाज में पूर्ण स्वतंत्र तो कोई हो ही नहीं सकता क्योंकि सापेक्षता में ही सामाजिक संबंध का मूल है। प्रत्येक व्यक्ति उसी मात्रा में दूसरे पर निर्भर है जिस मात्रा में दूसरा उसकी अपेक्षा रखता है। पुरूष स्त्री भी इसी अर्थ में अपने विकास के लिए एक दूसरे के सहयोग की अपेक्षा रखते है, इसमें संदेह नहीं। कठिनाई तब उत्पन्न होती है। जब यह सापेक्ष भाव एक की ओर से अधिक घट या बढ़ जाता है। पुरूष अपने व्यावहारिक जीवन के लिए स्त्री पर उतना निर्भर नहीं जितना स्त्री को होना पड़ता है स्त्री को प्रत्येक पग पर, प्रत्येक साँस के साथ पुरुष से सहायता की भीक्षा मांगते हुए चलना पड़ता है।''.(11)

'चाक' उपन्यास में नायिका सारंग का पग—पग पर पुरूषों के साथ व संघर्ष में पुरूषों पर निर्भरता महादेवी वर्मा के कथन को उद्घाटित करता है। 'चाक' में विभिन्न उत्सवों त्यौहारों के दृश्य हमें देखने को मिलते है और उसमें स्त्री की महत्वपूर्ण भूमिका हमें दिखाई देती है। रक्षाबंधन, करवा चौथ, संक्रान्ति, बसंत पंचमी, होली आदि के जीवन्त दृश्य स्त्री की कर्मठता व सहभागिता से सरस बन पड़ते है। 'चाक' उपन्यास में लेखिका ने हाशिये पर खड़ी स्त्री को समाज में पुनः स्थापित करने का प्रयास किया है 'चाक— पर चढ़कर 'रंजीत' व 'सारंग' का स्वरूप परिवर्तित हुआ । नायिका 'सारंग' अन्त में पुरूष प्रधान समाज में अपना सशक्त स्वरूप प्रधान पद की उम्मीदवार के रूप में रखती है। और समाज सुधार की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाना चाहती है सारंग के पति रंजीत का अन्त में मोहभंग होता है। वह समाज के ठेकेदारों के साथ संघर्ष करता है जबकि समाज के तथाकथित लोग रंजीत से कहते है कि 'आदमी में भाईचारा लाती है – शराब और औरत'' किन्तु रंजीत की आंखें खुल जाती है वह सारंग के प्रधान पद की उम्मीदवारी का विरोध नहीं करता है और उपन्यास की यह अन्तिम पंक्तियां इस बात का द्योतक है कि समाज करवट ले रहा है। ''बन्द किवाड़ो तक मुंह ले गए रंजीत परिचित गंध अपनेपन का गहरा अहसास जगा रही है सिर टेक दिया किवाड़ पर..... लगा कि चलते 'चाक' पर बैठे है।''.......(12)

और यह 'चाक' चलता रहेगा क्योंकि 'चाक' का दूसरा नाम है समयचक्र। चाक घूमेगा नहीं तो कुछ बनाएगा भी नहीं। वह घूमेगा और मिट्टी को बिगाड़कर नया बनाएगा नए रूप में ढालेगा आशा है नारी का परिवर्तित जीवन स्वरूप समाज में दिखाई देगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मैत्रेयी पुष्पा, चाक पृ. 7 2. हंस/जून 1993 पृ. 55—56 3. मैत्रेयी पुष्पा, चाक पृ. 11 4. वही, पृ. 41 5. वही, पृ. 141 6. वही, पृ. 345 7. अन्तिम दो दशकों का हिन्दी साहित्य मीरा गौतम पृ. 109 8. मैत्रेयी पुष्पा, चाक पृ. 401 9. वही, पृ. 155 10. वही, पृ. 215 11. साहित्य परिक्रम – अक्टू.—दिस. 2006 स्त्री के अर्थ स्वातंत्र्य का प्रश्न – महादेवी वर्मा पृ. 9 12. मैत्रेयी पुष्पा, चाक पृ. 435